UGC Approved Journal No – 40967
(IIJIF) Impact Factor- 4.172
Regd. No. : 1687-2006-2007
ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

AN INTERDISCIPLINARY PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Chief Editor : *Indukant Dixit*

Executive Editor : *Shashi Bhushan Poddar*

Editor
Reeta Yadav

Volume 13 March 2019 No. III

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.blogspot.com
www.jigyasabhu.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com

विकास के गाँधीवादी मॉडल की उपादेयता

हरेन्द्र यादव *

शोध सारांश

गांधी जी के आर्थिक विचारों की झलक उनके सर्वोदय दर्शन में मिलती है। सर्वोदय दो शब्दों के मेल से बना है– सर्व+उदय। सर्व का अर्थ है सभी का, सभी प्रकार से, उदय का अर्थ है उन्नति या कल्याण। अमीर–गरीब, स्त्री–पुरुष आदि समाज के सभी वर्ग का जीवन के समस्त पहलों सामाजिक–आर्थिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक उत्थान से है। इसमें अन्तिम रूप से पर्यावरण को भी सम्मिलित किया जा सकता है। गांधी जी सर्वोदय को तो मानते थे किन्तु उनका कहना था कि इसकी शुरुआत अन्त्योदय से होना चाहिए। विकास के अन्तिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का कल्याण करना ही उनका अन्तिम लक्ष्य था। अन्त्योदय के रास्ते पर चलकर ही सर्वोदय के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। गांधी जी का सर्वोदय, समानता, स्वतंत्रता न्याय जैसे लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ–साथ सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह जैसे भारतीय दार्शनिक चिंतन पर आधारित है।

प्रस्तावना

गांधी जी अन्याय एवं शोषण से मुक्त ऐसे समतामूलक समाज के पक्षधर थे जहाँ सभी व्यक्ति को अपनी आजीविका के लिए समान अवसर उपलब्ध हो, जहाँ लोगों में प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष के स्थान पर प्रेम एवं सहयोग की भावना हो। सभी व्यक्ति एक–दूसरे के सहयोगी के रूप में कार्य करे। एक व्यक्ति का विकास दूसरे व्यक्ति के विकास में बाधक न हो। समाज में जातिभेद, छुआछूत, निर्धनता, लिंगभेद के लिए कोई स्थान न होगा। लोग सर्वधर्म समभाव की भावना से कार्य करेंगे।

श्रम की महत्ता :

गांधी जी ने मानवजीवन में श्रम को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं के परिश्रम द्वारा ईमानदारीपूर्वक जीविकोपार्जन का प्रयास करना चाहिए। श्रम से ही मानव जीवन में गरिमा उत्पन्न होती है। उनका स्वयं का श्रमशील जीवन इसका उदाहरण था। वे अपने हाथों से काते सूत से बने कपड़ों का प्रयोग करते थे। गांधी जी के अनुसार देश को सम्पन्न और आत्मनिर्भर बनाने के लिए आर्थिक नीतियों का निर्माण इस प्रकार से किया जाय जिससे प्रत्येक उपभोक्ता, उत्पादक बन सके और ग्रामोद्योग उसका आधार हो। उनका विचार था कि प्रत्येक व्यक्ति को आर्थिक विकास में भागीदार बनाकर ही देश को आर्थिक रूप से सशक्त किया जा सकता है। वे श्रम सम्बन्धी इस विचार को प्राकृतिक निमों के

---

* असि. प्रोफे. (अर्थशास्त्र), राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर

REDMI NOTE 7 PRO
AI DUAL CAMERA
2023/2/26 17:09

समान सत्य मानते थे। उनका विचार था कि जो भी व्यक्ति इस प्राकृतिक नियम का उल्लंघन करेगा तो अपने जीवन में दरिद्रता एवं संकट को आमंत्रित करेगा। गांधी जी जानते थे कि भारत के पास पूंजी की कमी एवं श्रम की बहुलता है। अतः उन्होंने पूंजी निवेश के स्थान पर श्रम निवेश को वरीयता प्रदान की उनका मानना था कि श्रम निवेश द्वारा ही समाज में असमानता, गरीबी, भुखमरी को दूर किया जा सकता है। गांधी जी शारीरिक श्रम एवं मानसिक श्रम को समान महत्व देते थे। उनका मानना था कि एक मोची का कार्य उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि एक वकील का कार्य। श्रम से जीवन में एक ओर जहाँ गरिमा एवं आत्मसंतोष प्राप्त होता है, वहीं दूसरी ओर श्रम मन एवं शरीर दोनों का स्वस्थ रखता है।

ग्राम स्वराज :

गाजी जी का मानना था कि भारत गाँवों का देश है। अतः गांवों को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाकर ही भारत को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। इसलिए उन्होंने स्वदेशी तथा ग्राम स्वराज पर जोर दिया। गांधी जी सत्ता के विकेन्द्रीकरण के हिमायती थे, वे स्वतंत्रता की शुरुआत निचले स्तर से करना चाहते थे। गांधी जी के अनुसार गांवों की अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप अपनी विकास सम्बन्धी नीतियों के निर्धारण में स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। भारत में पंचायती राज व्यवस्था गांधी जी के इसी विचारधारा पर आधारित है। गांवों को आत्मनिर्भर कृषि विकास एवं कृषि आधारित गतिविधियों यथा पशुपालन, रेशमकीट पालन, मत्स्यपालन, हस्तशिल्प तथा लघु एवं कुटीर उद्योग के माध्यम से ही किया जा सकता है।

गांधी जी प्रत्येक घर को आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र बनाना चाहते थे। लघु एवं कुटीर उद्योग के माध्यम से प्रत्येक गांव आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनकर अपना विकास स्वयं कर सकते हैं। गांधी जी के अनुसार– ग्राम स्वराज से मेरा तात्पर्य एक ऐसे गांव से है, जो पूर्ण गणतन्त्र हो और अपनी महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं के लिए अपने पड़ोसी से स्वतंत्र हो। इसलिए सभी गांवों की पहली चिन्ता अपने खाने के लिए फसलों और कपड़े के लिए कपास का उत्पादन होना चाहिए। पशुओं के लिए चारागाह, वयस्कों और बच्चों के लिए खेल का मैदान छोड़ने के बाद यदि कोई अतिरिक्त जमीन बचती है तो गाँव, तम्बाकू, अफीम को छोड़कर अन्य व्यापारिक फसलों के लिए उसका उपयोग किया जा सकता है।"1

लघु एवं कुटीर उद्योग

गांधी जी केन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था को सारी बुराइयों की जड़ मानते थे। आज दुनिया में जो शोषण, हिंसा और असमानता दिखाई दे रही है, वह केन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था की ही देन है। इसलिए गांधी जी अन्याय , शोषण से रहित अहिंसक एवं समतामूलक समाज की रचना के लिए आर्थिक विकेन्द्रीकरण का को अनिवार्य एवं आवश्यक माना। उनका कहना था कि –

REDMI NOTE 7 PRO
AI DUAL CAMERA
2023/2/26 17:09

"मेरा सुझाव है यदि भारत को अहिंसा के आधार पर अपना नवनिर्माण करना है तो कई क्षेत्रों में विकेन्द्रीकरण का मार्ग अपनाना होगा, अहिंसा का निर्माण आत्मनिर्भर ग्रामों द्वारा ही हो सकता है जैसी मेरी धारणा है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में शोषण के लिए कोई स्थान नहीं है और शोषण हिंसा का प्रतिरूप है।" इस कथन से स्पष्ट है कि गांधी जी जहाँ एक ओर केन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था के विरोधी थे वहीं आत्मनिर्भर एवं सशक्त गांवों के निर्माण के लिए लघु एवं कुटीर उद्योगों के स्थापना के प्रबल समर्थक थे।

उनका मानना था कि स्थानीय कौशल एवं कच्चे माल की उपलब्धता के आधार पर प्रत्येक गांव तथा घरों को हस्तशिल्प, छोटे–मोटे कुटीर उद्योग की स्थापना की जाय। गांधी जी यूरोप प्रवास के दौरान पूंजीवाद के बुराइयों को नजदीक से देख चुके थे। इसलिए उनका मानना था कि उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद जैसी बुराइयाँ केन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था से ही उत्पन्न हुई हैं।

गांधी जी का कोई भी विचार अनुभव तथा प्रयोग पर आधारित होता था। वे जानते थे कि भारत एक श्रम प्रधान देश है। यहाँ पूँजी की कमी एवं श्रम की बहुलता है। अतः भारत के लिए पूंजी प्रधान की जगह श्रम प्रधान उत्पादन प्रणाली ही श्रेयस्कर होगी। गांधी जी का मानना था कि भारी मशीनों एवं यन्त्रों का प्रयोग उन देशों के लिए उपयुक्त हो सकता है, जहाँ पूंजी की प्रचुरता एवं श्रम की कमी हो। भारत जैसे देश के लिए जहाँ श्रम की बहुलता है, वहाँ भारी मशीनों एवं यन्त्रों का प्रयोग लोगों को बेरोजगार बनायेगी। इस प्रकार भारी मशीनों एवं यन्त्रों के प्रयोग को वे मानव अस्तित्व के लिए अभिशाप मानते थे। भारी मशीनों के प्रयोग ने जहाँ एक ओर मानव श्रम की महत्ता को कम किया है, वहीं दूसरी ओर गरीबी, बेरोजगारी, असमानता, हिंसा एवं शोषण में वृद्धि की है। उनका मानना था कि – "यन्त्रीकरण उस स्थिति में अच्छा सिद्ध हो सकता है जब काम की मात्रा की अपेक्षा काम करने वाले लोगों की संख्या बहुत अधिक हो जैसा कि भारत में है, तब यन्त्रीकरण एक बुराई है, हमारी समस्या यह नहीं है कि गाँवों में रहने वाले करोड़ों, मजदूर और किसानों को किस प्रकार अवकाश प्राप्त हो, इसके विपरीत हमारी समस्या उनके खाली एवं फालतू समय को इस प्रकार उपयोगी बनाने की है कि उन्हें वर्ष में अधिक नहीं तो कम से कम छः मास के लिए काम प्राप्त हो सके।" इस प्रकार भारत की समस्या पश्चिमी देशों की समस्या से भिन्न है। इसलिए गांधी जी ने भारत में लघु एवं कुटीर उद्योगों की स्थापना पर बल दिया।

उल्लेखनीय है कि गांधी जी सभी प्रकार के मशीनों के विरोधी नहीं थे बल्कि उन मशीनों के प्रयोग के विरोधी थे जो मानवश्रम को प्रतिस्थापित करती है तथा उन्हें बेरोजगार बनाती है। वे मशीने जो मानवीय श्रम के साथ कार्य को सुगम तथा कल्का बनाती हैं के हिमायती थे।

स्वदे REDMI NOTE 7 PRO AI DUAL CAMERA 2023/2/26 17:09

गांधी जी स्वतंत्रता आन्दोलनों के दौरान लोगों को स्वदेशी अपनाने पर जोर दिया। स्वदेशी अपनाने से एक ओर जहाँ देश के अन्दर उत्पादन एवं रोजगार की मात्रा में वृद्धि होगी, वहीं दूसरी ओर आयात कम होने से देश की पूंजी देश के अन्दर ही रहेगी। स्वदेशी के सम्बन्ध में गांधी जी का दृष्टिकोण बहुत व्यापक था। स्वदेशी का अर्थ यह नहीं है कि जिन वस्तुओं में देशी पूंजी तथा कौशल लगा हो वे स्वदेशी है, बल्कि वे सभी वस्तुएँ स्वदेशी हैं जो देश की सीमा के अन्दर भारतीय नियन्त्रण में उत्पादित होती हों भले ही उनमें लगी पूंजी एवं कौशल विदेशी हो। गांधी जी का मानना था कि स्वदेशी अपनाकर ही भारत को आर्थिक रूप से सक्षम एवं आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।

ट्रस्टीशिप

गांधी जी की आर्थिक विचारधारा सामाजिक न्याय, समानता एवं नैतिकबोध पर आधारित है। गांधी जी का मानना था कि समाज में एकता, अखण्डता एवं स्थायित्व के लिए आर्थिक विषमता का समाप्त होना आवश्यक है। अमीर और गरीब के बीच चौड़ी खाई सामाजिक सद्भाव एवं शान्ति के लिए खतरा है। आय एवं सम्पत्ति का असमान वितरण न केवल शोषण को बढ़ावा देता है बल्कि सामाजिक शान्ति एवं भाईचारा के भी विरूद्ध है, क्योंकि गरीब एवं भूखा व्यक्ति आसानी से पथभ्रष्ट हो सकता है। गांधी जी का मानना था कि जल, जंगल, जमीन जैसे प्राकृतिक संसाधनों पर सभी व्यक्तियों का समान अधिकार है। जब इन पर समाज के मुट्ठी भर लोगों का नियन्त्रण होता है तो समाज में अन्याय, शोषण एवं असमानता का जन्म होता है। अन्याय एवं शोषण से रहित समतामूलक समाज की स्थापना के लिए गांधी जी ने न्यासीकरण की अवधारणा को प्रस्तुत किया। इस अवधारणा के अनुसार धनी वर्ग अपनी सम्पत्ति के उतने ही भागों का उपयोग करे जितनी उनकी आवश्यकता है। शेष को समाज की धरोहर माने और इस अतिरिक्त धन का प्रयोग गरीबों के कल्याण में करें। गांधी जी की न्यासीकरण की अवधारणा मार्क्सवाद से भिन्न है। समता मूलक समाज की स्थापना के लिए मार्क्सवाद जहां हिंसात्मक क्रान्ति के द्वारा पूंजीपतियों के सम्पत्ति को बलात् हथियाने का पक्षधर है, वहीं गांधी जी के न्यासीकरण की अवधारणा सत्य अहिंसा और अपरिग्रह जैसे भारतीय दार्शनिक मूल्यों पर आधारित है। गांधी जी साध्य, साधन दोनों की पवित्रता के हिमायती थे। उनका मानना था कि शुभ साध्य की प्राप्ति, शुभ साधन के द्वारा ही हो सकता है। यदि साधन अशुभ है तो साध्य को भी अन्तिम रूप से पथभ्रष्ट होने से नहीं रोका जा सकता। मार्क्सवाद की तरह गांधी जी पूंजीपति वर्ग के समाप्ति के पक्षधर नहीं थे। गांधी जी का मानना था कि ऐसा करके समाज उस वर्ग को खो देगा जिसमें उत्पादन का कौशल है। गांधी जी पूंजीपतियों से धन उनके ह्रदय परिवर्तन द्वारा प्राप्त करना चाहते थे। ऐसा करने से जहाँ एक ओर धनी वर्ग का आध्यात्मिक एवं नैतिक उत्थान होगा

REDMI NOTE 7 PRO
AI DUAL CAMERA
2023/2/26 17:10

वहीं दूसरी ओर गरीब वर्ग का आर्थिक उत्थान होगा क्योंकि धनी वर्ग नैतिक रूप से दरिद्र है, तो गरीब वर्ग आर्थिक रूप से दरिद्र है। इस प्रकार गांधी जी का ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त उत्पादन की दृष्टि से पूंजीवादी है और वितरण की दृष्टि से समाजवादी।

आर्थिक विकास एवं पर्यावरण

मनुष्य की अतिशय उपभोक्तावादी प्रवृत्ति ने पर्यावरण संतुलन को इस कदर बिगाड़ दिया है कि स्वयं मनुष्य के अस्तित्व पर ही खतरे के बादल मड़राने लगे हैं। गांधी जी का मानना था कि सतत् विकास के लिए विकास एवं प्रकृति के बीच संतुलन एवं समन्वय आवश्यक है। इसलिए गांधी जी ने भारी उद्योगों के स्थान पर वृक्षारोपण, पशुपालन, मधुमक्खी पालन, हस्तशिल्प एवं कुटीर उद्योगों के विकास पर बल दिया क्योंकि भारी उद्योगों की अपेक्षा ये पर्यावरण को कम नुकसान पहुँचाते हैं। विकास का गांधीवादी मॉडल उनके पर्यावरणीय चिन्तन पर आधारित है। गांधी जी का मानना था कि प्रकृति के साथ हमारा सम्बन्ध संघर्ष एवं शोषण का न होकर सहयोग एवं समन्वय का है। इसलिए वे कहते थे– प्रकृति हमारी आवश्यकता को तो पूरा कर सकती है, पर लालच को नहीं।'' पुरातन भारतीय संस्कृति प्रकृति से याचना पूर्वक कुछ प्राप्त करने एवं प्रत्युत्तर में लौटाने की रही है। किन्तु आज हमारी समस्या वह है कि हम प्रकृति से प्राप्त तो कर रहे हैं किन्तु उसको लौटा नहीं रहे हैं।

निष्कर्ष

देश में उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण की नीति अपनाये के बाद निश्चित ही आर्थिक संवृद्धि दर बढ़ी है, और हमने हिन्दू वृद्धिदर की अवधारणा को मिथ्या साबित किया है। किन्तु देश में गरीबी, बेरोजगारी और आर्थिक विषमता को कम करने में अपेक्षित सफलता नहीं मिली है। आज भी हमारी करीब एक चौथाई जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे दयनीय स्थिति में जीवन यापन करने के लिए मजबूर है। अमीर और गरीब के बीच खाई कम होने के बजाय लगातार चौड़ी होती जा रही है। आक्सफैम इंटरनेशनल रिपोर्ट 2020 के अनुसार भारत में अमीर लगातार और अमीर तथा गरीब और गरीब हुआ है। इस रिपोर्ट के अनुसार 2018 में देश के एक प्रतिशत अमीरों के पास देश की 73 प्रतिशत सम्पत्ति है, शेष 99 प्रतिशत लोगों के पास देश की 27 प्रतिशत सम्पत्ति है। देश की बहुत बड़ी जनसंख्या को आर्थिक संवृद्धि का तुलनात्मक लाभ प्राप्त नहीं हुआ है। गांधी जी का अन्याय एवं शोषण से रहित समातामूलक एवं आत्मनिर्भर भारत का सपना पीछे छूटता जा रहा है। अगर देखा जाय तो अब तक का जो आर्थिक विकास हुआ है वो रोजगारविहीन विकास हुआ है, क्योंकि बड़े उद्योगों में छोटे उद्योगों की अपेक्षा रोजगार प्रदान करने की क्षमता कम होती है। अब तक सरकार का सारा जोर बड़े उद्वोगों के विकास पर रहा है। रोजगार ही वह माध्यम है जिसके द्वारा संवृद्धि रिसकर गरीब लागों तक पहुँच सकती है। हस्तशिल्प,

REDMI NOTE 7 PRO
AI DUAL CAMERA
2023/2/26 17:10

लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास द्वारा विशालश्रम शक्ति को रोजगार प्रदान कर गरीबी, बेरोजगारी और आर्थिक विषमता को कम किया जा सकता है।

समानता, नैतिकता और न्याय पर आधारित गांधी के आर्थिक विचारों का केन्द्र बिन्दु मानव है। तेजी से बढ़ती सकल घरेलू उत्पाद का तब तक कोई अर्थ नहीं है, जब तक कि उसका न्यायपूर्ण वितरण न हो तथा जनसामान्य के जीवन–स्तर में सुधार न हो। आज भारत गरीबी, बेरोजगारी, असमानता, भ्रष्टाचार, पर्यावरण प्रदूषण जैसे संकटों से घिरा हुआ है, इनका एक मात्र समाधान गांधी जी द्वारा बताये गये आर्थिक विचारों के अनुसरण में है। गांधी जी के आर्थिक विचार किसी देश–काल तक सीमित नहीं है। जब तक विश्व में गरीबी, बेरोजगारी, विषमता, भूखमरी, अन्याय, शोषण पर्यावरण संकट विद्यमान रहेगा तब तक गांधी जी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता बनी रहेगी।

संन्दर्भ :

1. एम0 के0 गांधी–हिन्द–स्वराज, पृ0 219–22, हरिजन 4 अगस्त, 1940, पृ0 236
2. एम0 के0 गांधी यंग इण्डिया 8 दिसम्बर, 1920, पृ0 886
3. गांधी, मोहन दास करमचन्द, मेरे सपनों का भारत, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1960.
4. गांधी, मोहनदास करमचन्द, सत्य का प्रयोग(आत्मकथा), नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स, दिल्ली, 2010
5. भागर्व, डॉ0 पी0 के : गांजी जी के आर्थिक विचार(प्रकाशित लेख), आर्थिकी, खण्ड 13–14
6. नरायन श्रीमान(1970) : रिलेवेन्स आफ गांधियन इकोनामिक. नवजीवन पब्लिशिंग हाउस
7. भारतीय अर्थव्यवस्था : सर्वेक्षण तथा विश्लेषण– प्रो0 एस0 एन0 लाल, शिव पब्लिशर्स, इलाहाबाद।
8. योजना, अक्टूबर 2009, ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण में गांधीयन मॉडल की भूमिका, कन्हैया त्रिपाठी।

***

REDMI NOTE 7 PRO
AI DUAL CAMERA
2023/2/26 17:10